ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 अंक- 2 अप्रैल-II-2018 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 10.00

आधुनिकता से नहीं, अध्यात्म से होगा महिला सशक्तिकरण

क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए गणमान्य महिलायें।

रायपुर-छ.ग.। **महिला, बाल विकास एवं समाज कल्याण मंत्री श्रीमती रमशीला साहू** ने कहा कि महिला सशक्तिकरण आधुनिकता से नहीं अपितु अध्यात्म से होगा। हम आधुनिकता में इतना न रम जाएं कि अपनी संस्कृति को ही भूल जाएं।

वे अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शान्ति सरोवर में आयोजित 'महिला जागृति आध्यात्मिक सम्मेलन' में सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि बेटियाँ घर की शोभा हैं, और हमारा भविष्य भी। इसलिए बेटी पैदा होने पर मन को छोटा न करें।

ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी ने कहा कि आदिकाल में जब महिला आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न थी तब उसकी पूजा होती थी। मनुष्य शक्ति मांगने के लिए दुर्गा या अन्य देवियों के पास जाते हैं। तो आज आवश्यकता है उसी देवत्व से अपने जीवन को श्रृंगारित करने की, तभी हम समाज को नई दिशा दे सकेंगे।

राज्य महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती हर्षिता पाण्डे ने कहा कि यह चिन्तन करने का वक्त है कि हम अपने समाज को क्या दे रहे हैं। महिलाएं आज स्वतंत्र तो हैं, परंतु अध्यात्म से दूर हैं।

बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्षा श्रीमती प्रभा दुबे ने कहा कि आज के दौर में सुई में धागा डालने से लेकर विमान उड़ाने तक का काम महिलाएं कर रही हैं। ये उनके भीतर छिपी प्रतिभा का परिचायक है। तो महिलाओं को किसी भी रूप में कम नहीं आंकना चाहिए। आज लड़कियाँ हर क्षेत्र में, चाहे खेल कूद हो या परीक्षा हो, सभी में ज़्यादा नम्बर लेकर आगे रहती हैं।

राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. नीलम ने कहा कि महिलाओं को पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने जीवन में भौतिकता और आध्यात्मिकता का सन्तुलन बनाकर चलना चाहिए। प्रारम्भ में नव जागृति हाई स्कूल सड्डू की छोटी-छोटी बालिकाओं ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। संचालन ब्रह्माकुमारी रश्मि ने किया। समारोह में बड़ी संख्या में नगर की प्रबुद्ध महिलाओं ने हिस्सा लिया।

महिलाओं के सशक्तिकरण से रहेगा संतुलित समाज

मुम्बई भायंदर। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में **प्रसिद्ध लेखिका एवं कवियत्री इंदु पोरवाल** ने कहा कि सुख शांति के लिए समाज में बैलेंस बनाए रखना चाहिए तथा सभी को एक दूसरे का सहयोग देकर आगे बढ़ना चाहिए।

नगर सेविका अर्चना कदम ने कहा कि नारी की जितना महिमा करें उतनी कम है, क्योंकि एक अच्छे समाज के निर्माण में उनकी भूमिका भी अति महत्वपूर्ण है। नारी सशक्तिकरण ही समाज के सशक्तिकरण का आधार है।

पीस ऑफ़ इंडिया राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा शिल्पा भावसार ने कहा कि पहले के ज़माने में महिला ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्वयं को आध्यात्मिक शक्ति से भरपूर करती थी। आज पुन: समय की मांग है कि पहले अपने मन की शक्तियों को ब्रह्ममुहूर्त में उठकर बढ़ाएं, फिर अपनी दिनचर्या आरंभ करें।

सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.भानु ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में दी जा रही आध्यात्मिक शिक्षा समस्त मानव मात्र के लिए है। जिससे मनुष्य में मूल्यों के प्रति जागरुकता बढ़ती है और वो विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को स्थिर और स्वस्थ रख सकता है।

मानव अधिकार प्रतिष्ठा सचिव भावना मेवाडा ने कहा कि सभी नारियों को मिलजुल कर आगे बढ़ना चाहिए और अपनी बेटियों को भी प्रेरणा देनी चाहिए, क्यूंकि एक हाथ से 100 हाथ बढ़ सकते हैं।

आर.एस.एस. कार्यकर्ता बहन सावित्री ने कहा कि आध्यात्मिक क्षेत्र में ये ब्रह्माकुमारी बहनें जो प्रकाश डाल रही हैं, ये यहाँ तक ही सीमित ना रहे, बल्कि ये रोशनी विश्व के हरेक कोने में पहुँचे, यही मेरी शुभकामना है। साथ ही उन्होंने इस कार्य की भूरी भूरी प्रशंसा की।

शिव नर्सरी स्कूल की प्रिंसिपल बहन वीणा ने कहा कि नारी का मतलब नाज़ुक नहीं शक्ति है।

कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रसिद्ध लेखिका इंदु पोरवाल, नगरसेविका अर्चना कदम, ब्र.कु. भानू तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

वैश्विक सुरक्षा में महिलाओं की भूमिका पर महिला सम्मेलन

कोस्टा रिका दूतावास एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' सम्मेलन का आयोजन

मंचासीन हैं ब्र.कु. चक्रधारी, मरिएला क्रूज़, ब्र.कु. अशा, डॉ. शिवा, दिव्या खोसला, प्रो. कल्यानी व प्रो. मेनन।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'वैश्विक सुरक्षा में महिलाओं की भूमिका' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में **प्रसिद्ध पर्यावरणविद् एवं वैज्ञानिक डॉ. वंदना शिवा** ने कहा कि सम्पूर्ण प्रकृति एवं मानव चेतना का आपस में बहुत गहरा सम्बन्ध है। आज हम लोभ के कारण प्रकृति से अधिक पैदावार लेने के लिए रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कर रहे हैं। वास्तव में ये भी एक बहुत बड़ी हिंसा है जिससे हम धरती के अनेक पोषक तत्वों को नष्ट करते हैं। जिस कारण ही मानव मन में भी हिंसा का जन्म हो रहा है। उन्होंने कहा कि हमें आध्यात्मिक मूल्यों को जागृत कर स्वयं को सशक्त बनाने की बहुत आवश्यकता है।

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री दिव्या खोसला कुमार मुम्बई ने कहा कि अगर हम बाहर के संसार को परिवर्तन करना चाहते हैं तो पहले हमें अपने अंदर के संसार को बदलना होगा। जीवन में जिस तरह ऑक्सीज़न बहुत ज़रूरी है, ठीक उसी तरह आज के नकारात्मक वातावरण में स्वस्थ एवं सुखी रहने के लिए योग अति आवश्यक है।

अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली की प्रो. कृष्णा मेनन ने कहा कि आध्यात्मिकता और धार्मिकता में रात-दिन का अंतर है। आध्यात्मिकता आत्मा का वो गुण है जो जीवन को शांत और सुखी बनाता है। हम केवल भौतिक शरीर मात्र नही हैं। इस शरीर को चलाने वाली ऊर्जा को समझना ही वास्तव में आध्यात्मिकता है।

जिन्दल ग्लोबल लॉ विश्वविद्यालय की एसोसिएट प्रो. कल्याणी उन्कुले ने बताया कि विश्व में महिलाओं की जितनी सहभागिता बढ़ेगी, उतना ही विश्व सुरक्षित रह सकता है। हमें स्वयं की व लोगों की योग्यताओं पर विश्वास होना चाहिए।

ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि नारी शक्ति के द्वारा ही विश्व परिवर्तन होगा। ईश्वर ने मातृशक्ति को प्रेम, दया, रहम और करुणा जैसे गुणों सम्पन्न किया है। वर्तमान समय इन्हीं गुणों की सबको आवश्यकता है।

महिला प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. चक्रधारी ने कहा कि मूल स्वरूप में हम सभी आत्मा हैं। जब हम अपने आत्मिक स्वरूप का अनुभव करते हैं तो हमारी आन्तरिक शक्तियां जागृत होती हैं। कार्यक्रम में देश व दुनिया में श्रेष्ठ कार्य करने वाली अनेक प्रतिष्ठित महिलाओं ने शिरकत की। अनेक एक्टीविटीज़ के माध्यम से महिलाओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

शान्ति के लिए योग ही सशक्त माध्यम : मरिएला क्रूज़

कोस्टा रिका की राजदूत मरिएला क्रूज़ ने कहा कि आज के कार्यक्रम का मूल उद्देश्य विश्व एकता एवं शान्ति की पुन:स्थापना है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता विश्व के प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। वर्तमान समय विश्व में बढ़ती हिंसा और अराजकता बहुत ही चिन्ता का विषय है। योग ही एक ऐसा माध्यम है जो हमें पुन: शान्ति की ओर ले जा सकता है। योग से जीवन में प्रेम, शान्ति और आनन्द जैसे गुण जागृत होते हैं। राजयोग वास्तव में सम्बन्धों को मधुर बनाता है। उन्होंने कहा कि मुझे इस स्थान पर आने से ही शान्ति और सुकून के गहरे प्रकम्पन महसूस हुए जोकि योग से ही संभव है।